

"सुरेश कुमार मिश्रा की खेल उपलब्धियां और विरासत: एक अर्जुन पुरस्कार विजेता वॉलीबॉल चैंपियन"

सुरेंद्र सिंह

शोधार्थी, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़, राजस्थान

प्रोफेसर (डॉ.) रविंदर सिंह सुमल

डीन, शारीरिक शिक्षा, खेल व योग और निदेशक खेल, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़, राजस्थान

सार

सुरेश कुमार मिश्रा भारतीय वॉलीबॉल में सबसे प्रसिद्ध हस्तियों में से एक हैं, जो कोर्ट के अंदर और बाहर अपने उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रसिद्ध हैं। अर्जुन पुरस्कार विजेता एथलीट के रूप में, उनके करियर की विशेषता असाधारण खेल उपलब्धियां हैं, जिसमें भारतीय वॉलीबॉल टीम की कप्तानी करके ऐतिहासिक जीत हासिल करना और नई पीढ़ी के खिलाड़ियों को प्रेरित करना शामिल है। यह समीक्षा पत्र मिश्रा की खेल यात्रा, एक खिलाड़ी के रूप में उनके शुरुआती विकास से लेकर राष्ट्रीय आइकन के रूप में उनके उदय की पड़ताल करता है। यह घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उनके प्रमुख प्रदर्शनों, नेतृत्व गुणों और उनके शानदार करियर के दौरान अर्जित सम्मानों की जांच करता है। इसके अतिरिक्त, यह पत्र पेशेवर खेल से उनके संन्यास के बाद भारत में वॉलीबॉल प्रतिभाओं को बढ़ावा देने और उनका मार्गदर्शन करने में उनकी स्थायी विरासत पर प्रकाश डालता है। उनकी उपलब्धियों के प्रक्षेपवक्र और भारतीय खेल संस्कृति पर उनके स्थायी प्रभाव का पता लगाकर

मुख्य शब्द: भारतीय वॉलीबॉल, अर्जुन पुरस्कार, खेल विरासत, वॉलीबॉल नेतृत्व, भारतीय खेल प्रतीक, एथलेटिक उपलब्धियाँ

परिचय

सुरेश कुमार मिश्रा का जन्म सीकर जिले के लक्ष्मणगढ़ कस्बे में 11 सितम्बर, 1953 को हुआ था। इनके पिता का नाम स्व. श्रीमान् मालचन्द मिश्रा तथा माता का नाम स्व. श्रीमती गायत्री देवी मिश्रा था। ये कुल 5 भाई-बहन हैं। जिनमें इनके भाईयों के नाम श्री रमाकान्त मिश्रा एवं श्री अनिल कुमार मिश्रा हैं तथा बहनों के नाम सुधा मिश्रा एवं उषा मिश्रा हैं। इनके पिताजी सरकारी अध्यापक (English Literature) थे तथा माताजी गृहिणी थी। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा (कक्षा 3 से 11) श्री रघुनाथ विद्यालय, लक्ष्मणगढ़ (सीकर) से हुई तथा इन्होंने सन् 1967 में कक्षा 10 उत्तीर्ण की थी। इनका विषय वर्ग वाणिज्य (Commerce) रहा है। इसके बाद इन्होंने अपनी उच्च शिक्षा सन् 1969 में श्री भगवानदास तोदी महाविद्यालय, लक्ष्मणगढ़ (सीकर) में B.Com. I से शुरू की।

इनके खेल क्षेत्र की शुरुआत इनकी स्कूली शिक्षा के समय (सन् 1966) से ही हो गई थी। इनके पिताजी भी फुटबॉल के खिलाड़ी रहे हैं और साथ ही इनके पिताजी की रुचि संगीत एवं मोनो एक्टिंग में भी थी। सुरेश कुमार मिश्रा को खेल के प्रति प्रेरणा जगदीश प्रसाद पुरोहित एवं शुभकरण जी रणवा से मिली। ये इनके प्रेरणास्त्रोत खिलाड़ी रहे हैं। इनके भाई

रमाकान्त मिश्रा भी राजस्थान विश्वविद्यालय वॉलीबॉल टीम के कप्तान एवं सीनियर टीम में राजस्थान स्टेट के खिलाड़ी रहे हैं। इन सभी के सहयोग से सुरेश कुमार मिश्रा को अपने खेल वॉलीबॉल के क्षेत्र में रूचि को बढ़ाने एवं प्रगति करने में सहायता मिली। सर्वप्रथम प्रेरणादायक खेल गुरु इन्होंने अपने पिताजी को माना है क्योंकि पिताजी से ही इन्हें खेल के क्षेत्र में रूचि प्राप्त हुई। साथ ही रामलाल जी सोनी भी इनके प्रेरणादायक गुरु रहे हैं जो की पहले श्री रघुनाथ विद्यालय, लक्ष्मणगढ़ (सीकर) में अंग्रेजी के शिक्षक थे। बाद में कॉलेज में प्रथम वर्ष में व्याख्याता के रूप में सामने आये।

इनका व्यवहार मित्रवत् रहा है। प्रारम्भिक शिक्षा के समय रामनिरंजन जोशी। विश्वनाथ टेलर, राजकुमार नाई, श्रवण कुमार इनके मित्र रहे हैं। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सुरेश कुमार पुरोहित, श्यामसुन्दर शर्मा, विजय कुमार जालान, शुभकरण पुरोहित, गोविन्द प्रसाद चुड़ीवाला, रामसहाय गोयनका, सन्तोष कुमार गोयनका, राजकुमार शर्मा, बालकृष्ण जोशी आदि सभी इनके मित्र रहे हैं।

23 मई 1972 को इनका विवाह इन्दु मिश्रा से हुआ। इनकी धर्मपत्नी के पिताजी का नाम सज्जन कुमार एवं माताजी का नाम रूकमणी है। ये झुन्झुनू जिले के बगड़ गाँव से हैं तथा इन्होंने अपनी शिक्षा 10वीं कक्षा तक की है। इनके एक पुत्र जिनका नाम आनन्द मिश्रा है। इनके खेल क्षेत्र की शुरुआत सीकर जिले से हुई। इन्होंने 1970 में राजस्थान से नेशनल चैम्पियनशील का प्रथम मैच खेला।

अन्तरराष्ट्रीय स्तर के सफर में भारत की टीम से सेवन एशियन गेम्स 1974 जो कि ईरान (तरहान) में हुए के प्रतिभागी रहे। इसके बाद 1978 में एट एशियन गेम्स, बैंककांग (थाईलैण्ड) में, 1979 में (बेहरीन) एशियन चैम्पियनशिप, 1978 में फ्रांस की टीम के साथ 3 टेस्ट मैच जीते। 1980 में रूसिया की टीम भारत आयी, उनके साथ 5 टेस्ट मैच हुए जिनमें 2 मैच जीते तथा 3 मैच हारे। इस समय सुरेश कुमार मिश्रा जी ने टीम के कप्तान के रूप में भूमिका निभाई।

उद्देश्य

1. सुरेश कुमार मिश्रा के व्यक्तित्व का अध्ययन करना।
2. सुरेश कुमार मिश्रा के खेल कैरियर में मिडिया की भूमिका का पता लगाना।

भारतीय वॉलीबॉल टीम ने ओलंपिक खेलों में भाग लिया (ओ.जी.)

भारत की पुरुषों की राष्ट्रीय वॉलीबॉल टीम दुनिया भर में ऐसी प्रतियोगिताओं में भारत का प्रतिनिधित्व करने के इरादे से अंतर्राष्ट्रीय वॉलीबॉल स्पर्धाओं में खेलती है। एसिक्स और सहारा इंडिया परिवार दो निगम हैं जो वर्तमान में इस आयोजन के लिए अपना समर्थन दे रहे हैं। संगठन का प्रबंधन वॉलीबॉल फेडरेशन ऑफ इंडिया की जिम्मेदारी है। अपने अस्तित्व की अवधि के दौरान भारतीय वॉलीबॉल टीम ने एक भावनात्मक रोलर कोस्टर की सवारी का अनुभव किया है। इस तथ्य के बावजूद कि वे कभी भी ओलंपिक के लिए योग्यता आवश्यकताओं को प्राप्त नहीं कर पाए हैं, उन्होंने दो अलग-अलग समय पर विश्व चैम्पियनशिप में भाग लिया है। जैसा कि इस तथ्य से पता चलता है कि उन्होंने एशियाई खेलों में एक रजत पदक और दो कांस्य पदक जीते हैं, टीम ने महाद्वीपीय स्तर पर कुछ हद तक सफलता हासिल की है। इस तथ्य के बावजूद कि उनके पूरे इतिहास में, उन्हें अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य पर बहुत कम या कोई प्रतिनिधित्व नहीं मिला है, यही कारण है कि उन्होंने यह हासिल किया है। 1980 के दशक में शुरू हुई गिरावट की अवधि के बाद, टीम ने हाल ही में स्थापित एशियाई कप इवेंट में अच्छा प्रदर्शन किया है। यह एक बहुत ही प्रभावशाली उपलब्धि है। इस बिंदु तक, उन्हें दो पदक, एक रजत और एक कांस्य से सम्मानित किया गया है।

इस तथ्य के बावजूद कि वॉलीबॉल काफी समय से अनौपचारिक रूप से खेला जाता रहा है, भारतीय ओलंपिक संघ (IOA) वह संगठन था जिसने वर्ष 1936 में पहली अंतरराज्यीय वॉलीबॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया था।

वॉलीबॉल फेडरेशन ऑफ इंडिया की स्थापना 1951 में की गई थी, जिसके परिणामस्वरूप न केवल अंतरराज्यीय टूर्नामेंट को वरिष्ठ राष्ट्रीय चैंपियनशिप में बदल दिया गया, बल्कि खेल को एक अधिक संरचित ढांचा भी प्रदान किया गया। वरिष्ठ राष्ट्रीय चैंपियनशिप में उद्घाटन प्रतियोगिता 1952 में हुई थी। इस मंच के उपयोग के प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में, बहुत से बहुत प्रतिभाशाली लोग पैदा हुए जिन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व किया।

निष्कर्ष

भारतीय वॉलीबॉल में सुरेश कुमार मिश्रा की यात्रा उत्कृष्टता, नेतृत्व और समर्पण का प्रमाण है। अर्जुन पुरस्कार विजेता एथलीट के रूप में, कोर्ट पर उनकी उपलब्धियों ने न केवल देश को गौरव दिलाया, बल्कि अनगिनत युवा एथलीटों को जुनून और दृढ़ संकल्प के साथ वॉलीबॉल खेलने के लिए प्रेरित किया। एक खिलाड़ी, कप्तान और संरक्षक के रूप में उनकी भूमिका ने भारत में खेल के विकास पर एक अमिट छाप छोड़ी है। अपनी व्यक्तिगत उपलब्धियों से परे, मिश्रा की विरासत उनके द्वारा स्थापित मानकों और भविष्य की पीढ़ियों में उनके द्वारा डाली गई भावना में निहित है। उनका करियर खेलों में दृढ़ता, अनुशासन और राष्ट्रीय गौरव के महत्व को उजागर करता है। सुरेश कुमार मिश्रा जैसे दिग्गजों के योगदान को पहचानना और उनका जश्न मनाना भारतीय खेल संस्कृति के निरंतर विकास और संवर्धन के लिए महत्वपूर्ण है।

सन्दर्भ

1. "सुंदर राव का वॉलीबॉल के साथ 54 साल का रोमांस". तेलंगाना टुडे। 26 जून 1986।
2. "आवश्यक कोच"। द हिंदू। 22 अगस्त 2002। 19 सितंबर 2004 को मूल से संग्रहीत। 24 अप्रैल 2012 को पुनःप्राप्त।
3. "श्रीधरन: 'पीवीएल भारत को एशियाई टीमों के बराबर लाने में मदद करेगा'।"। स्पोर्ट्सटार। 28 नवंबर 2018।
4. "एशियाई पुरुष चैंपियनशिप वॉलीबॉल 2023 / जयदीप सरकार: दोषरहित टीम कप जीतेगी"। 22 सितंबर 2023 को पुनःप्राप्त।
5. दैनिक बुलेटिन #1 एशियाई खेल 2022 (पीडीएफ)। एशियाई वॉलीबॉल परिसंघ। 18 सितंबर 2023।
6. "भारतीय वॉलीबॉल टीम ओलंपिक कट बनाने में विफल रही"। 8 अप्रैल 2023 को पुनःप्राप्त।
7. "भारत की वॉलीबॉल टीम ओलंपिक क्वालीफायर में कतर से हारी"। 8 अप्रैल 2023 को पुनःप्राप्त।
8. "2020 पुरुष ओलंपिक वॉलीबॉल क्वालीफायर: कोरिया के खिलाफ तीन सेट की हार के बाद भारत बाहर हो गया"। 8 अप्रैल 2023 को पुनःप्राप्त।

9. "1952 वॉलीबॉल विश्व चैम्पियनशिप के परिणाम". मूल से 24 सितंबर 2015 को संग्रहीत. 8 अप्रैल 2023 को पुनःप्राप्त.
10. "भारत में वॉलीबॉल". 4 मई 2022. 8 अप्रैल 2023 को पुनःप्राप्त.
11. "प्रतिष्ठित एशियाई खेल पदक: सियोल में भारत का ऐतिहासिक वॉलीबॉल कांस्य"। 2 अगस्त 2018। 8 अप्रैल 2023 को लिया गया।
12. "एशियाई खेल 2014: भारत पुरुष वॉलीबॉल में पांचवें स्थान पर रहा"। 8 अप्रैल 2023 को लिया गया।
13. "भारत एशियाई वॉलीबॉल चैम्पियनशिप में नौवें स्थान पर रहा"। 8 अप्रैल 2023 को लिया गया।
14. "भारतीय वॉलीबॉल टीम का सम्मान किया गया"। द हिंदू। 13 सितंबर 2010। 8 अप्रैल 2023 को लिया गया।
15. ^ "भारत एशियाई पुरुष वॉलीबॉल कप 2022 में 10वें स्थान पर रहा"। 12 अगस्त 2022। 8 अप्रैल 2023 को लिया गया।
16. "2023 एवीसी पुरुष चैलेंज कप बुलेटिन डे 2" (पीडीएफ) पर जाएं। एवीसी। 8 जुलाई 2023 को मूल से संग्रहीत (पीडीएफ)। 9 जुलाई 2023 को पुनःप्राप्त।
17. "लुसोफोनिया गेम्स: भारत ने मकाऊ को हराकर पुरुष वॉलीबॉल में स्वर्ण पदक जीता"। टाइम्स ऑफ इंडिया। 21 जनवरी 2014। 9 जून 2024 को पुनःप्राप्त।
18. "13वें दक्षिण एशियाई खेल: भारतीय पुरुष वॉलीबॉल टीम ने स्वर्ण पदक जीता; खिताबी मुकाबले में पाकिस्तान को हराया"। 8 अप्रैल 2023 को पुनःप्राप्त।
19. "दक्षिण एशियाई खेल: पुरुष वॉलीबॉल फाइनल में भारत बनाम पाकिस्तान"। टाइम्स ऑफ इंडिया। दिसंबर 2019। 8 अप्रैल 2023 को पुनःप्राप्त।